भूमिका

विश्व की लगभग सभी भाषओं के साहित्य का प्रारम्भ काव्य से ही हुआ था। उस समय काव्य अपने समय व उस समय की परिस्थितियों को अभिव्यक्त करने का सर्वोतम साधन भी था। लेकिन जैसे-जैसे समय में परिवर्तन हुआ और एक लम्बे समय अन्तराल के बाद आधुनिक युग की जटिल समस्याओं और विविधताओं को व्यक्त करने में काव्य असफल होने लगा। धीरे-धीरे काव्य का स्थान गद्य ने ले लिया। इस गद्य साहित्य में भी कथा-साहित्य को सर्वोच्च महत्त्व प्राप्त हुआ। कथा-साहित्य में भी उपन्यास में सामान्य जन की समस्या को ज्यादा मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया, इसी कारण ये सामान्य जनता से ज्यादा करीब से जुड़ता गया। उपन्यासों की भाषा की सरलता और सुगमता के कारण ही उपन्यास जन- जन तक पहुँचा।

उपन्यासविधा आधुनिक गद्य साहित्य की एक लोकप्रिय देन है। इस सम्बन्ध में **राल्फ फाक्स** का विचार महत्वपूर्ण है **कि " पूंजीवादी सभ्यता ने संसार की कल्पना प्रधान संस्कृति को जोभेट दी हैंउनमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण है- उपन्यास"** समकालीन मनुष्य की जटिलता और विविधता का समग्र रूप से चित्रण केवल उपन्यास में ही संभव है।

शुरुआत से ही मेरी रूचि उपन्यासों के अध्ययन में होने के कारण ही जब मुझे शोध कार्य करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। तब मैंने अपने शोध –विषय के रूप में उपन्यास का चयन किया। क्योंकि उपन्यास अपनी सहजता, सरलता और गहन समझ को समग्रता के साथ पाठक तक संप्रेषित करता है।

उपन्यासोंमें भी मेरा रुझान स्त्री समस्याओं से सम्बंधित उपन्यासों में ज्यादा रहा है। इसलिए मैंने अपने शोध-विषय के लिए ऐसे दो उपन्यासों को चुना जिसके केंद्र में स्त्री है। हिंदी साहित्य हो या पंजाबी साहित्य स्त्री हर समाज, हर देश में शोषित है। मैंने एक उपन्यास हिंदी साहित्य से और एक उपन्यास पंजाबी साहित्य से लिया है। दोनों ही समाजों में स्त्री की स्थिति में थोड़ा बहुत अंतर अवश्य है , पर स्त्री शोषण से कोई समाज अछुता नहीं है, फिर चाहे वो हिंदी साहित्य में व्यक्त समाज हो या पंजाबी साहित्य में व्यक्त समाज हो , स्त्री हर समाज में दोयम दर्जे की नागरिक है।

मैंने अपने शोध विषय के लिए ऐसी दो महिला उपन्यासकर को चुना है। जो अपने-अपने समाज के सामाजिक ढांचे के तले दबी-कुचली जा रही, स्त्रियों की स्थिति को बताने में सक्षम है। हिंदी साहित्य में आधुनिक युग की महिला उपन्यासकारों में जो स्थान 'कृष्णा सोबती' को प्राप्त है, वही स्थान पंजाबी साहित्य में 'अमृता प्रीतम' को प्राप्त है। दोनों ही नाम अपने-अपने साहित्य में एक

विशेष स्थान रखते हैं। बात चाहे अनुभव की हो या अभिव्यक्ति की दोनों ही स्तरों पर इन रचनाकारों ने अपने लेखन से स्त्री शोषण को एक बुलन्द आवाज़ दी है। मैंने 'कृष्णा सोबती' के 'डार से बिछुड़ी' और 'अमृता प्रीतम' के 'पिंजर' उपन्यास को लिया है। दोनों ही उपन्यासों में पुरुष शासित समाज की दमनकारी नितियों, रीति-रिवाजों, परम्पराओं, संस्कृतियों तथा संस्कारों आदि के नाम पर शोषित होती, नारी की समाज में क्या स्थिति है? इसी का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

'सामाजिक बंदिशें और स्त्री' के अध्ययन का मुख्य कारण आजादी के दगों से अभी तक के नारी जीवन को निकट से जानना और महसूस करना चाहती थी, और यह भी जानना चाहती थी कि उस समय की स्त्री और आज की स्त्री के शोषण में क्या अंतर है? अगर कोई बदलाव आया है तो वो कितना? या फिर शोषण का केवल तरीका बदला हैं। स्त्री की कंडीशनिंगइस तरह की जाती है कि वो इस सामाजिक ढांचे के अन्दर शोषित होती रहती है। उसे पता भी नहीं चलता किआज की स्त्री अपने अस्तित्व की जो लड़ाई लड़ रही है, उसका क्षेत्र बहुत ही व्यापक है। उसे अपनी लड़ाई की शुरुआत अपने घर से करनी होगी और समाज तक फैलानी होगी। उसे अपने लिए संघर्ष, अपनी ही दहलीज से शुरू कर, दहलीज के पार समाज तक जाना होगा।ऐसा क्यों है ? कि घर की चौखट पार करते ही उसे कुलता, कुलछनी, कलकनी तथा बेशर्म जैसे नए- नए नामदे दिए जाते है। इस पितृसत्तात्मक समाजने सारे सम्मान को स्त्री की देह में स्थापित कर दिया है। हम अधिकतर ऐसा सुनते ही रहते हैं कि पंजाबी लोग बहुत आधुनिक ख्याल के होते हैं, पर ये सब सुनने की बातें हैं। सिर्फ भ्रांति है,जिसकी वास्तविकता हम 'अमृता प्रीतम' के 'पिंजर' उपन्यास में भी देख सकते हैं। और समाज चाहे जो हो स्त्री हर समाज में शोषित होती रही है। बदलता है,तो बस शोषण का स्तर, पर स्त्री का शोषण हर

समाज में व्याप्त है।

नारी के अस्तित्व का सवाल अपने आप में ही उलझा हुआ है। उसका अस्तित्त्व, उसका न होकर समाज के ठेकेदारों की बपौती है। इस भागते -दोड़ते आधुनिक समाज में इतने अधिकार मिल जाने के बाद भी नारी की अस्मिता का प्रश्न ज्यों का त्यों खड़ा है। ना ही इन प्रश्नों का जबाब किसी के पास है, न इनका कोई अंत ही है। अगर कोई अंत है तो वो क्या हो सकता है ? इस तरह के सवालों की उत्सुकता ने ही मुझे इस विषय पर काम करने को विवश किया है। इस शोध-प्रबंध को मैंने चार अध्यायों में विभाजित किया गया है। इस शोध-प्रबंध का क्षेत्र सिमित होने के कारण मैंने 'कृष्णा सोबती' के 'डार से बिछुड़ी' और 'अमृता प्रीतम' के 'पिंजर' दोनों रचनाकारों के एक-एक उपन्यास का चयन कर तुलनात्मक अध्ययन किया है। यह लघु शोध-प्रबंध एक अन्तर-अनुशासनिक

विषय से सम्बंधित है। इसमें तुलनात्मक ,विश्लेष्णात्मक तथा व्खायात्मक शोध प्रविधि के आलोक में स्त्री समस्याओं का अध्ययन किया गया है।

पहला अध्याय 'समाज व्यवस्था में स्त्री', इसे तीन उपध्यायों में बाँटा गया है। इसमें स्त्री आंदोलनों की शुरुआत किस प्रकार हुई, स्त्री आंदोलनों का इतिहास बताते हुये, पश्चिमी और भारतीय दोनों जगहों के स्त्री से सम्बंधित विचारकों के विचारों को शामिल किया गया है पितृसता के स्वरूप और आधुनिक समाज में स्त्री की स्थिति पर विचार रखे गए हैं।

दूसरा अध्याय ' 'डार से बिछुड़ी' और 'पिंजर' दोनों उपन्यासों में 'स्त्री जीवन की बंदिशे'। प्रस्तुत अध्याय को तीन उपाध्यायों में बाँटा गया है। जिसमें दोनों उपन्यासों के आधार पर यह दिखाने की कोशिश की गई है कि समाज में स्त्री के प्रति किस तरह का व्यहार होता है। लैंगिक विषमता स्त्री और पुरुष के बिच किस तरह सबसे बड़ी विषमता के रूप में पोषित हो रही है और पोषित करने वाला है ये समाज। जिसके सभी रीति- रिवाज , परम्पराएँ , सामाजिक-मूल्य तथा संस्कार सब स्त्री के लिए हैं। जिस समाज मे स्त्री को पूजने जैसे श्लोक हैं। उस समाज में स्त्री की वास्तविक परिस्थितियां क्या हैं? इन सभी मुद्दों पर विचार किया गया है।

तीसरा अध्याय 'डार से बिछुड़ी' और 'पिंजर' दोनों उपन्यासों में 'अभिव्यक्त स्त्री संघर्ष' प्रस्तुत अध्याय को दो उपाध्यायों में बाँटा गया है। उपन्यास के आधार पर ये समझाने की कोशिश की गई है कि एक स्त्री को किस तरह का संघर्ष परिवार में करना पड़ता है और किस तरह का संघर्ष समाज में। ये दोनों ही स्त्री शोषण के प्रमुख हथियार हैं।

चतुर्थ अध्याय में 'निष्कर्ष' दिया गया है। तीसरी सदी का यह दशक विविधता और जटिलता को लिए हुये है। इस विविधता और जटिलता में स्त्री को किसी बंधे-बधाए साचें में ढालकर स्त्री को देखना संभव नहीं है। इस बदलाव को ही ध्यान में रखकर '**नेमिचन्द्र जैन**' ने लिखा है कि **"अब वह, खिलौना नहीं, केवल रमणी भी नहीं, मात्र संगिनी भी नहीं, अधिकाधिक व्यक्ति होती जा रही हैं"**

90 के दशक के आर्थिक उदारीकरण का असर साहित्य पर ही नहीं बल्कि महिला लेखन पर भी दिखाई देता है। उसी समय महिला लेखन एक नये उत्साह और एक नई स्फुर्ति के साथ साहित्य पटल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करता है। ममता कालिया , प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग, नासिरा शर्मा तथा राजी सेठ आदि इन नई लेखिकाओं के लेखन में नई चेतना के साथ एक नया स्वर भी सुनाई देता है, क्योंकि इनके द्वारा सृजित नारी पात्रों में दुनिया के प्रत्येक कोने में संघर्षकरती स्त्री की छवि दिखाई

देती हैं। यह वह स्त्री नहीं है जो अब केवल मताधिकार से संतुष्ट हो जाएगी। उसकी मांग अब व्यक्तिगत पहचान की है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्यसमाज में स्त्री जीवन की वास्तविक पहचान और समानता का है।

यह लघु शोध-प्रबंध जिनके मार्ग दर्शन से संभव हो पाया, वह मेरे शोध-निर्देशक प्रोफेसर कृष्ण कुमार सिंह, हिंदी एवम् तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गाँधी अन्तराष्ट्रीय हिंदी विश्विद्यालय, वर्धा, की सदैवआभारी रहुँगी। जिनके निर्देशन और उत्साह वर्धक प्रेरणा ने सदैव मेरा मार्ग प्रशस्त किया। साथ ही विभागाध्यक्ष प्रो. सूरज पालीवाल, डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. वीरपाल सिंह यादव, प्रीति सागर मैडम, रुपेश सर, उमेश सर, सुनील सर तथा टेकचंद सरका भी धन्यवाद करती हूँ। इनका सहयोग भी मुझे बराबर मिलता रहा।

एक महत्वपूर्ण आभार मैं अपने माता-पिता को व्यक्त करना चाहती हूँ। जिन्होंने मुझे यह अवसर दिया,जिससे आज में एक शोध-प्रबंध लिख पायी। मैं अपने माता-पिता की सदैव आभारी रहुंगी और सदैव इस कोशिश में रहूँगी कि उन्होंने जितना भी मेरे लिए किया,उसका एक प्रतिशत भी अगर मैं उन्हें लौटा पाऊँ, तो अपने आप को भाग्यशाली समझूंगी। शैलेश भईया का मैं खास आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिन्होने मेरी आखिर तक बहुत मदद की। रवींद्र भईया जिन्होने मेरी सहायता के लिए मुझसे कई बार कहा। एक आभार में गुरमीत(चंदू), अनुष्का जो मेरी हर मुसकिल में एक मुस्कान देते रहें हैं।

इस लघु-शोध कार्य में सहयोग करने वाली मेरे सभी दोस्त सौरभ, मनीषा, कविता, अर्चना, गीतेश तथा विभाग के सहायक संदीप भैया, नितीश भैया तथा अन्य कर्मचारी एवं स्त्री अध्ययन विभाग की सुभागी मेम , कंचन मेम , एवम् समस्त सहपाठीयों का विशेष आभार जिनके सहयोग के बिना शायद यह लघु शोध-प्रबंध इस रूप में नहीं आ पाता।